International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 393-395

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 393-935
www.allresearchjournal.com
Received: 13-09-2015
Accepted: 17-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

हिन्दी उपन्यास और फणीश्वर नाथ रेण

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा उपन्यास का प्रारम्भ भी अन्य गद्य विधाओं की तरह भारतेन्दु युग में हुआ। यह सत्य है कि आधुनिक उपन्यास का आरम्भ यूरोप से हुआ परन्तु हिन्दी के उपन्यासों का विकास पाश्चात्य उपन्यास के अनुकरण पर नहीं हुआ। हिन्दी में उपन्यास लिखने से पूर्व ही बांग्ला साहित्य में यह विधा काफी पहले ही विकसित हो चुकी थी। अतः बंगला उपन्यासों ने हिन्दी उपन्यासों को पर्याप्त प्रभावित किया इसमें सन्देह नहीं। फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी उपन्यास साहित्य के मुकुट–मणि माने जाते हैं। प्रेम चन्द के बाद सबसे लोक प्रिय उपन्यासकारों की कोटि में इन्हें गिना जाता है। उससे पूर्व कि रेणु जी के योग दान की चर्चा करें आवश्यक है हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास का सिंहावलोकन किया जाए ताकि उसके परिप्रेक्ष्य में रेणु जी के अमूल्य योगदान का मूल्यांकन किया जा सके।

पूर्व प्रेमचन्दयुग

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी अन्य विधाओं की तरह हिन्दी में उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया था परन्तु दुर्भाग्य से पूरा न हो सका। अतः परीक्षा गुरु को हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है जिसके लेखक श्रीनाथ हैं। इस युग में सभी प्रकार के उपन्यास लिखे गए। इस युग के प्रमुख उपन्यास लेखकों में बालकृष्ण भट्ट–नूतन ब्रह्मचारी तथा सौ अजान एकसुजान, राधाकृष्णदास-निस्सहायहिन्दु, किशोरी लाल गोस्वामी–लवंगलता, बालमुकंदगुप्त–कामिनी, इसके अतिरिक्त रत्नचन्द, ब्रज नन्दन सहाय, बलदेव मिश्र, कृष्णप्रसाद सिंह ने भी कुछ अच्छे उपन्यास लिखे। इस युग में बंगला एवं अंग्रेजी में हिन्दी अनुवाद भी हुआ। इस युग के अन्य मौलिक उपन्यासकारों में देवकी नन्दन खत्री, गोपाल गहमरी, आदि के नाम गिने जा सकते हैं। खत्री और गहमरी ने तिलस्मी और एयारी उपन्यास लिखकर हिन्दी जगत में खूब नाम कमाया। खत्री जी का चन्द्रकान्तासन्तति इतना प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय हुआ कि लोगों ने इस उपन्यास को पढने के लिए हिन्दी सीखी। द्विवेदी युग में प्रायः अन्य भाषाओं का हिन्दी में अनुवाद हुआ, फिर भी आयोध्या सिंह उपाध्याय, लज्जाराम मेहता, तथा ब्रजनन्दन सहाय ने कुछ मौलिक सुन्दर उपन्यास लिखे।

प्रेमचन्द युग

हिन्दी में उपन्यास साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण नाम प्रेम चन्द का ही है। उन्हें हिन्दी उपन्यास साहित्य का सम्राट कहा जाता है। उन्हें सही अर्थ में उपन्यास साहित्य का प्रणेता कहा जा सकता है। उन्होंने सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास लिखकर एक नवीन युग का प्रवर्तन कियां उनके उपन्यास के माध्यम से सही ढंग से जनसाधारण को वाणी मिली तथा कला केवल मनोरंजन की वस्तु न रह कर जीवन के मर्म को उद्घाटित करने वाली बनी। मध्य वर्ग, किसान की प्रमुख समस्याओ को इन्होंने अपने उपन्यासों का विषय बना कर जनसाधारण की समस्याओं को उद्घाटित किया तथा समाधान के लिए प्रश्न पैदा किया। प्रेम चन्द के उपन्यास अपने युग के सन्दर्भ ग्रंथ हैं। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, गांधी दर्शन किसान समस्या, तथा जातिगत समस्या, भ्रष्टाचार नारी शिक्षा, नारी शोषण इनके उपन्यासों के मुख्य विषय रहे। प्रेमचन्द ने राजनीतिक एव सामाजिक दो प्रकार के उपन्यास लिखे। प्रेमा और वरदान उनके प्रारम्भिक उपन्यास हैं। सेवासदन को उनका प्रथम प्रौढतम उपन्यास माना जा सकता है। गोदान न केवल प्रेमचन्द का अपितु हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को अन्य अनमोल उपन्यास दिए जिनमें प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कायाकल्प, निर्मला प्रमुख हैं।

प्रेम चन्द युग के अन्य श्रेष्ठ उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, शिवपूजन सहाय, चतुरसेन शास्त्री, विशम्भर नाथ कौशिक बेचन शर्मा उग्र, बृन्दावन लाल वर्मा, इलाचन्द्र जोशी तथा जैनेन्द्र कुमार के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं।

प्रेमचन्दोत्तर युग

इस युग में भिन्न–भिन्न उपन्यास लिखे गए। सामजिक, मनोविश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, साम्यवादी, आदि हर तरह के उपन्यासों का बाढ सी दिखाई देती है। चतुरसेन शास्त्री एवं अश्क ने सामाजिक, उपन्यास लिखे। भगवती वर्मा ने चित्रलेखा, टेढे मेढे रास्ते आदि प्रमुख उपन्यास लिखे। अमृतलाल वर्मा के बूंद और समुद्र, तथा अमृत और विष प्रसिद्ध उपन्यास हैं। मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त पर लिखे गए उपन्यास मुक्तिपंथ तथा सुबह के भूले उनके मुख्य उपन्यास हैं। अज्ञेय के शेखर एक जीवनी, अपने अपने अजनवी, जैनेन्द्र कुमार के परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, आदि महत्व पूर्ण उपन्यास हैं। इसके बाद धर्मवीर भारती के गुनाहों का देवता, सूरज का सातवां घोडा तथा नरेश मेहता का डूबते मस्तूल एवं सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का सोया हुआ जल आदि उपन्यास विशेषतःउल्लेखनीय हैं।

साम्य वादी उपन्यासो में राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, भैरव प्रसादगुप्त, अमृतराय आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वैशाली की नगर वधु, रक्त की प्यास, मन्दिर की नर्तकी, सोमनाथ, आदि उपन्यासकारों ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। गढकुण्डार, विराटा की पद्मिनी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, मृगनयनी, आदि उपन्यास वृन्दावनलाल वर्मा ने लिखे।

आंचलिक उपन्यास और फणीश्वर रेणु

उपन्यासों में आंचलिक उपन्यास अपनी अलग पहचान है। आंचलिक उपन्यासों में फणीश्वर नाथ रेणु का स्थान सबसे उपर गिना जाता है। फणीश्वर नाथ रेणु ने मैला आंचल तथा परती परिकथा, दीर्घतपा, जलूस आंचलिक उपन्यास लिखे। फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म सन् 4 मार्च 1921 में बिहार की पूर्णिया जिले के औराही हिंगना गांव में हुआ। प्रथम अप्रैल, 1977 को आपका निधन हुआ। उपन्यास के अतिरिक्त उन्होंने ठुमरी कहानी तथा रिपोर्ताज भी लिखे।

आंचलिक उपन्यास के मुख्य तत्वों में भौगोलिक पृष्ठभूमि का चित्रण, कथानक का आंचलिक आधार, लोकसंस्कृति का चित्रण, अंचल की राजनीतिक चेतना और धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति का चित्रण और जनजागरण का संदेश मुख्य रूप से सम्मिलित होता है।

हिन्दी साहित्य में प्रथम आंचलिक उपन्यास के रूप मे रेणु जी के मैलाआंचल को अधिकांश आलोचक प्रथम आंचलिक उपन्यास मानते हैं। रेणु को आंचलिक उपन्यास मैला आंचल वास्तव में आंचलिक उपन्यास में शिखर पर स्थापित कर देता है। शिवपूजन सहाय ने देहाती दुनिया, प्रेमचन्द ने गोदान में, निराला ने बिल्लेसुरबकरिहा में, और नागार्जुन ने बलचनमा में गांव का जो चित्र प्रस्तुत किया है उससे कहीं बेहतर आंचलिकता के प्रत्येक पक्ष का चित्रण रेणु जी के उपन्यास मैला आंचल में देखने को मिलता है।

रेणु जी का वर्णन करने का तरीका अलग किस्म का है उनके इस वर्णन को टेप शैली कह सकते हैं। इसमें निरन्तर बदलते हुए आज के गांव की आत्मा की गाथा है जो सदियों से सोने के बाद अब जाग गया है। भारत के गांव का परिवेश अज्ञान, ब अधविश्वास, रूढियों, विषमताओंऔर पारस्परिक द्वेष के कारण अपनी चमक खो कर मैला हो गया है। उनके इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन की बडी घटनाओं, आचार–विचार, रीतिरिवाज, पर्वत्यौहार, रूढि–अन्धविश्वास तथा राजनीतिक गतिविधियों के संश्लिष्ट और गत्यात्मक चित्र मिलते हैं। इस तरह यह उपन्यास स्वतंत्रता के बाद घटित हो रहे परिवर्तनों का एक सन्दर्भ ग्रंथ है।

रेणु जी ने ग्रामीण स्तर पर व्याप्त बुराइयों का सांगोपांग चित्रण किया है उनकी आंख से एक भी बात छुप नहीं सकी है। प्रायः सभी बुराइयों को यथार्थ रूप में वर्णन करने की क्षमता साधारणतः सभी लेखकों में नहीं होती। उन्होंने राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, समस्याओं के अतिरिक्त अनैतिक यौन सम्बन्धों का खुल कर उल्लेख किया है जो ग्रामीणस्तर पर व्याप्त हैं। इसके इलावा आदिवासियों की समस्या, प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह तथा भयंकर बीमारियों और उनसे मुक्ति की समस्या का भी सुन्दर एवं यथार्क चित्रण उन्होंने अपने उपन्यास में किया है।

डॉ रामदरश मिश्र के अनुसार इस उपन्यास के लेखक की व्यंग्य–शक्ति प्राचीन और नवीन के संघर्षों, राजनीति, धर्म और समाज की नई–पुरानी मर्यादाओं के आपसी संघर्षों तथा इन सबके बीच उलझते–सुलझते तीव्र अन्त र्विरोधों को बडी कुशलता से चित्रित करती चलती है। रेणु का उद्देश्य उपन्यास के क्षेत्र में एक नया प्रयोग कहा जा सकता है, क्योंकि इस से पूर्व उपन्यासकारों ने विशेषतः आंचलिकता पर आधारित विशेष प्रयास नहीं किया था, कई उपन्यासों में आंशिक रूप से ही वर्णन मिलता है। गोदान में अवश्य ग्राम्यजीवन का वर्णन है परन्तु जिस प्रकार आंचलिकता को ही लक्ष्य बना कर रेणु जी ने प्रयास किया है वह अपने आप में अलग मिसाल है।

रेणु के अन्य आंचलिक उपन्यासों में परती परिकथा का उल्लेख किया जा सकता है। इसका प्रकाशन सन् 1957 में हुआ। इस उपन्यास में आंचलिक लोकगीतों, ललित कथाओं तथा लोकभाषा के साथ पूर्णिया जनपद के पुराणपुर गांव की संस्कृति का यथार्थ चित्र अंकित करने में सफल रहा हैं। इसकी भाषा शैली में उपन्यासकार ने स्थानीय शब्दों, पशु–पक्षियों की बोलियों, नए गढे हुए शब्दों तथा ग्रामीण लोकोक्तियों का खुल कर प्रयोग हुआ है।

जुलूस–यह रेणु जी का लघु आंचलिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन् 1965 में हुआ। इस उपन्यास का कथा क्षेत्र भी पूर्णिया जिले के गांव कें बनाया गया हैं इसमें रेणु जी ने ग्रामीण लोकजीवन तथा उनकी अच्छी बुरी विशेषताओं का यथार्थ चित्रण किया है। यह उपन्यास लघु हो कर भी बहुत कुछ कह गया है। इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन, रहन-सहन, रीति रिवाज एवं सामाजिक बुराइयों को सामने लाने का प्रयास उपन्यासकार द्वारा किया गया है।

दीर्घतपा तीसरे उपन्यास का प्रकाशन 1963 में हुआ था। इसमें लम्बे समय से तपस्यारत एक नारी की कहानी का सुन्दर वर्णन है। इसमें भी अंधविश्वासों, कामुकता, कुण्ठा, नारी की दशा, भ्रष्टाचार, ईर्ष्या तथा पूंजीवाद के दुश्परिणामों काउललेख बडी सुन्दरता से किया गया है।

कुल मिला कर रेणु जी के अन्य तीनों उपन्यास उनकी उपन्यास कला का नमूना पेश करते हैं। यह भी सत्य है कि मैला आंचल के समकक्ष इन्हें नहीं रखा जा सकता।

मैला आंचल यद्यपि भाषा शैली की दृष्टि से उत्तम रचना है फिर भी कोई भी रचना सम्पूर्ण नही होती। इस उपन्यास में भी कुछ त्रुटियां देखी जा सकती हैं। इसमें यत्रतत्र कथा–घटनाओं का अनावश्यक विस्तार देखने को मिलता है तथा सूत्रबद्धता का अभाव दिखाई देता है। फिर भी कुछ न्यूनताओं के बाबजूद मैला आंचल ने हिन्दी उपन्यास क्षेत्र को नवीनता प्रदान की है। एक नई सोच और विधा का सूत्रपात किया है तथा आंचल विशेष के जनजीवन को सच्चे और सहज रूप में प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में नई भाषा और नए शिल्प का प्रयोग किया है। मैला आंचल के ही कारण अनेक उपन्यासकारों का ध्यान इस विधा की ओर गया। मैला आंचल जैसे उपन्यासों की गणना विश्व के श्रेष्ठ उपन्यासों में की जाती है। मैला आंचल जहां आंचलिक दूसरी चीजों को उदघाटित करता है वहीं आंचलिक जनवाणी को भी मुखरित करता है तथा निरन्तर संघर्षरत जनजीवन को अभिव्यक्ति देता है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से मैला आंचल उत्कृष्ट रचना हैं।

नेमिचन्द जैन ने रेणु जी के उपन्यास की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि मैला आंचल की विशिष्टता इस बात में है कि यह पुरानी पद्धति से हट कर एक नए रूप मे हमें ग्रामीण स्तर तक ले जाकरं आंचलिकता से परिचय कराने में सक्षम है। इस तरह रेणु जी को उपन्यास विधा को एक नई उंचाइयों पर पहंचाने का श्रेय

जाता है। जब भी उपन्यास साहित्य की बात चलेगी प्रेमचन्द के अतिरिक्त रेणु जी की चर्चा के बिना सदैव अधूरी रहेगी।

सन्दर्भ–सूचि

1. विद्याधर द्विवेदी हिन्दी के आंचलिक उपन्यास पृ76
2. फणीश्वर नाथ रेणू मैला आंचल पृ 56
3. उपरोक्त मैला आंचल पृ86
4. डॉ रेणू शाह फणीश्वर नाथ रेणू का कथा शिल्प पृ124
5. रामदरश मिश्रा हिन्दी के आंचलिक उपन्यास पृ78
6. चण्डी प्रसाद हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्रीय विवेचन पृ137
7. फणीश्वर नाथ रेणू मैला आंचल पृ86
8. उपरोक्त मैला आंचल पृ79
9. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव हिन्दी उपन्यासों में प्राचीन और नवीन जीवन मूल्यों का संघर्ष पृ142